कबीर

ऐसी बाणी बोलिए मन का आपा खोय
अपना तन सीतल करै औरन को सुख होय

बात करने की कला ऐसी होनी चाहिए जिससे सुनने वाला मोहित हो जाए प्यार से बात करने से अपने मन को शान्ति तो मिलती ही है साथ में दूसरों को भी सुख का अनुभव होता है. आज के ज़माने में भी कॉमयूनिकेशन का बहुत महत्व है. किसी भी क्षेत्र में तरक्की करने के लिए वाक्पटुता की अहम् भूमिका होती है.

कस्तूरी कुंडली बसै मृग ढूंढे बन माहि
ऐसे घटी घटी राम हैं दुनिया देखए नाही

हिरन की नाभि में कस्तूरी होता है, लेकिन हिरन उससे अनभिग्य उसकी सुगंध के कारण कस्तूरी को पूरे जंगल में ढूंढता है. ऐसे ही भगवान हर किसी के अन्दर वास करते हैं फिर भी हम उन्हें देख नहीं पाते हैं. कबीर का कहना है की तीर्थ स्थानों में भटक कर भगवान् को ढूढने से अच्छा है की हम उन्हें अपने अन्दर तलाशें.

जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाही
सब अँधियारा मिटी गया दीपक देख्या माहीं

जब मनुष्य का मैं यानि अहँ होता है तो उसे इश्वर नहीं मिलते हैं. जब इश्वर मिल जाते हैं तो मनुष्य का अस्तित्व नहीं रहता है बल्कि वह इश्वर में मिल जाता है. ये सब ऐसे ही होता है जैसे दीपक के जलने से सारा अँधेरा दूर हो जाता है.

सुखिया सब संसार है खाए अरु सोवे
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवे

पूरी दुनिया मौज मस्ती करने में मशगूल रहती है और सोचती है के सब सुखी है. लेकिन सही मायने में सुखी तो वो है जो दिन रात जाग कर प्रभु की आराधना करता है.

बिरह भुवंगम तन बसे मन्त्र न लागे कोई
राम बियोगी ना जिवे जिवे तो बौरा होई

जिस तरह से प्रेमी के बिरह के काटे हुए पर किसी भी मन्त्र या दवा का असर नहीं होता है. उसी तरह भगवान् से बिछर जाने वाले जीने लायक नहीं रह जाते हैं, क्योंकि उनकी जिंदगी पागलों के जैसी हो जाती है.

निंदक नेड़ा राखिये आँगन कुटी छवाई
बिन साबण पानी बिना निर्मल करे सुभाई

जो आपका आलोचक हो उससे मुंह नहीं मोड़ना चाहिए, बल्कि हो सके तो उसके लिए अपने पास ही रहने का समुचित प्रबंध कर देना चाहिए. क्योंकि जो आपकी आलोचना करता है वो बिना पानी और साबुन के आपके दुर्गुणों को दूर कर देता है.

पोथी पढि पढि जग मुवा पंडित भया न कोई
एकै अषर पीव का पढे सो पंडित होई

मोटी मोटी किताबें पढने से कोई ज्ञानी नहीं बन पाता है. इसके बदले में अगर किसी ने प्रेम का एक अक्षर भी पढ़ लिया तो वो बड़ा ज्ञानी बन जाता है. विद्या के साथ साथ व्यावहारिकता भी जरूरी होती है.

हम घर जाल्या आपना लिए लुकाटी हाथ
अब घर जालों तास का जे चलै हमारे साथ

लोगों में यदि प्रेम और भाईचारे का सन्देश फूंकना हो तो उसके लिए आपको पहले अपने मोह माया और सांसारिक बंधन त्यागने होंगे. कबीर जैसे साधू के पथ पर चलने की योग्यता पाने के लिए यही सबसे बड़ी कसौटी है